नबी(स०) की सीरत

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िबला, कराची

नून और क़सम है क़लम की और उसकी जो कुछ वह लोग लिखते हैं। तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हो और बेशक तुम्हारे लिये बेइन्तेहा सवाब है और यक़ीनन तुम बड़े आला दर्जे के अख़लाक़ वाले हो और अनक़रीब तुम भी देख लोगे और ये लोग भी देख लेंगे कि तुम में से मजनून कौन है।

इल्मो कमाल से बेख़बर दुनिया वाले नबी अरबी[स०] को अल्लाह की पनाह मजनून कहा करते थे इसलिए कि इन लोगों में इतनी अक़्ल न थी कि वह नुबुव्वत के मरतबे की बुलन्दी और बड़ाई को समझ सकते बिल्कुल उसी तरह जैसे एक अन्धा दिन को रात समझता है क्योंकि उसकी आँखों में बसारत ही नहीं जिस से वह दिन की रौशनी को देख सके बस उसी तरह वह लोग जो बातिनी नूर से महरूम थे और जिनकी रूह जेहालत के अंधेरों में गुम थी वह रिसालत की चमकती हुई शुआओं को किस तरह देख सकते और उनकी समझ में ये बात किसी तरह आती कि एक इन्सान ऐसा भी हो सकता है जिसे अल्लाह अपनी रिसालत का मन्सबे जलील अता फ़रमाए और उसको वह मक़ामे क़ुर्ब इनायत करे जो किसी दूसरे को हासिल न हो, उस पर अपनी किताब उतारे और वह्यि नाज़िल फरमाये और वह तमाम कायनात को हिदायत के रास्ते पर लगाने का फ़र्ज़ अन्जाम दे और आलम की कोई क़ुव्वत इस अज़ीमुश्शान और अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दे को उसके फ़र्ज़े हिदायत को अन्जाम देने से रोक न सके और वह पाक इन्सान दुनिया में ज़ाहिर होकर बनी नौए बशर को इस सही मक़ाम व मन्ज़िलत व इज़्ज़त से आगाही बख़्शे जो उसे कायनात के समाज में हासिल है वह रहबरे कामिल पूरी इन्सानियत के रहबरी फ़रमाए और उसे जेहालत के अंधेरों से निकाल कर रुश्दो हिदायत के उजालों में ले आए और उन चीज़ों की पूजा से उसे नजात लिदाए जो ख़ुद उसकी ख़िदमत के लिए पैदा की गई हैं चूँकि जाहिल और ग़ाफ़िल इन्सानों के ज़मीर इन हक़ीक़तों को नहीं जानते थे और मारफ़त व फ़िक्र की इस बुलन्द सतह से बहुत पस्त थे। इसलिए जब वह ये देखते थे कि रसूले अकरम[स०] ख़ुदाए वाहिद व यक्ता का एलान करते हैं और लातो उज़्ज़ा और हुबुल को एक बेबस हक़ीर पत्थर के सिवा कुछ भी नहीं समझते और उन पेशानियों की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते जो उन बुतों के सामने सजदे करती हैं और उन लोगों को जानवरों से बदतर जानते हैं जो इन बुतों को अपना आबाई और ज़रूरतें पूरा करने वाला समझते रहे हैं तो ये सब कुछ देख कर इन गुमराह इन्सानों के पास इसके सिवा और कोई रास्ता न था कि वह हुज़ूर[स०] को ख़ुदा की पनाह, मजनून कहने की जसारत व बेअदबी करें। इस जसारत का जवाब अल्लाह ने इस तरह दिया कि ख़ुद अपने रसूल[स०] से ख़िताब फ़रमायाः "तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्लो करम से हरगिज़ मजनून नहीं हो" और फिर फरमाया कि "तुम्हारे लिये तो इस रिसालत के बदले में ऐसा हमेशा रहने वाला सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा और तुम तो बड़े बुलन्द व अच्छे अख़लाक़ वाले हो" और आख़िर में ये इरशाद हुआ कि "तुम ख़ुद भी देख लोगे और जो तुम्हारे मुक़ाबले में गुस्ताख़ियाँ करते हैं वह भी देख लेंगे कि दीवाना और

मजनून कौन है।" अल्लाह! खुदा के कलाम की बलाग़त व अज़मत! कि इसे भी पसन्द नहीं किया जाता कि वह्यि इलाही का ख़िताब काफ़िर और मुश्रिक इन्सानों की तरफ़ भी हो और उन्हें सीधे तौर पर उनकी उस बेअदबी का जवाब दिया जाय बल्कि यहाँ सिर्फ़ अपने हबीब[स०] की तरफ से ख़िताब फ़रमाकर इन्तिहाई बलीग़ अन्दाज़ में उन हक़ का इन्कार करने वालों की गुमराही और बेअदबी का जवाब भी कितना मुँहतोड़ कि इस दीवानगी का सुबूत तो अनक़रीब अपने आप मिल जायगा कि कौन दीवाना है। आने वाली तारीख़ बतायेगी, मुस्तक़बिल के तारीख़ी पन्ने इस जसारत के जवाब को उभार कर पेश कर देंगे और दुनिया खुद अपनी आँखों से देख लेगी कि मजनून कौन था और समझदारी और अक़्लमन्दी किसके पास थी, कौन हक़ पर था और कौन बातिल पर।

आज वह दीवाने इन्सान जो रसूले अरबी[स०] की शान में गुस्ताख़ियाँ करते थे कायनात के अंधेरों में और ज़िल्लत व रुसवाई के गहरे ग़ारों में इस तरह गुम हो चुके हैं कि उनका कहीं नाम और निशान नज़र नहीं आता। न उनका इक़्तेदार है न उनकी दौलत व इज़्ज़त है और न उनकी शान व शौकत बाक़ी है मगर वह यतीमे अब्दुल्लाह[स०] जिनकी बारगाह में वह तागूती गिरोह गुस्ताख़ियाँ किया करता था आज बनी नौए इन्सान के ज़हन व ज़मीर पर हुक्मरानी कर रहा है और इस बुलन्द तरीन इन्सान की लाई हुई शरीअत और किताबे इलाही पूरी इन्सानियत के लिए सरचश्म-ए-हिदायत है। इन आयात में अख़लाक़े नबवी की मदहो सना की गई है। बिला शुबा आपकी ज़ाते गिरामी बेहतरीन अख़लाक़ की उस मंज़िल पर थी जहाँ किसी और का गुज़र नहीं हो सकता। आपकी सीरते पाक और बुलन्द किरदार का एतेराफ़ तो उन लोगों को भी था जो आपके सख़्त तरीन दुश्मन थे। इन्सानी अख़लाक़ के हज़ारहा गोशे हैं मगर हुज़ूर की ज़ाते अक़दस अख़लाक़ की हर क़िस्म और हर रुख़ के लिए बेमिसाल नमूना थी। उम्महातुल मोमिनीन[रज़ि०] और साहब-ए-केराम[रज़ि०] का मुत्तफ़ेक़ा बयान है कि हुज़ूर इन्तेहाई नर्म मिज़ाज थे और बेहतरीन सीरत के मालिक थे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा ने एक मरतबा ख़िदमते गिरामी में अर्ज़ की थीः "खुदा की क़सम आप सिल-ए-रहम करते, मक़रूज़ लोगों का बोझ उठाते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, महमानों की ज़ियाफ़त फरमाते हैं, हक़ की नुसरत व हिमायत करते हैं और मुसीबतों और परेशानियों में लोगों के काम आते हैं। इसलिए यक़ीनन खुदा आपको ग़मगीन नहीं करेगा।" सरवरे कायनात की अमानतदारी ऐसी थी कि आपके दुश्मन तक आपको "अमीन" के लक़ब से याद करते थे और इसी अमानत की सिफ़त का ये नतीजा था कि हिजरत की शब में जब हज़रत अली बिन अबी तालिब को अपने बिस्तर पर आराम करने का हुक्म दिया तो साथ ही ये भी हिदायत फ़रमाई थी कि मेरे पास मक्के वालों की जितनी भी अमानतें हैं उन सब को वापस करना उसके बाद मदीना की तरफ रवाना होना। आम लोग ऐसे वक़्तों में इन बातों का कहाँ ख़याल रखते हैं लेकिन हज़रत सरवरे अम्बिया[स०] की ज़ाते गिरामी का कोई अमल ऐसा न था जो अमानतदारी और अद्लो इन्साफ़ के ख़िलाफ़ हो।

आप कभी किसी को बुरा नहीं कहते थे। बुराई के बदले में बुराई नहीं करते थे बल्कि उसको माफ कर दिया करते थे। आपने कभी किसी से अपने ज़ाती मामले में बदला नहीं लिया, कभी किसी शख़्स को यहाँ तक कि कनीज़ और गुलाम और जानवरों को भी तकलीफ नहीं दी, कभी किसी की जायज़ दरख़्वास्त रद्द नहीं की, अगर किसी की तरफ से कभी कोई ऐसी बात होती जो आप पर गराँ गुज़रती थी तो आप उससे आँख फेर लेते और नज़रअन्दाज़ फरमाते थे, आपने कभी किसी उम्मीदवार को मायूस नहीं किया, आपकी आदतथी कि जब कोई दूसरा बात करता तो आप उसकी बात को काटते न थे बल्कि ख़ामोशी के साथ सुनते रहते थे, इसी तरह दूसरों के मुँह से अपनी तारीफ सुनना भी पसन्द नहीं करते थे। लेकिन अगर कोई आपके एहसान का शुक्रिया अदा करता था तो उसे क़ुबूल फ़रमाते थे।

एक वह वक़्त था जब आँहज़रत ने क़ैसरे रूम हिरक़्ल को इस्लाम की तरफ दावत देने के लिए ख़त

भेजा था तो उसने बड़े इन्तिज़ाम के साथ दरबार मुनअक़िद किया और हुक्म दिया कि बैतुल मुक़द्दस में जो अहले मक्का तिजारत की ग़रज़ से आये हैं उन्हें बुलाया जाय, इत्तेफ़ाक़ से उस ज़माने में अरब ताजिरों के साथ अबुसुफ़यान भी मुक़ीम था जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुआ था, जब ये लोग दरबार में आए तो क़ैसर ने अबुसुफ़यान से रसूले करीम के मुताल्लिक़ बहुत सी बातें दरयाफ़्त की थीं। उनमें से एक ये बात भी दरयाफ़्त की थी कि उन्होंने कभी किसी अहद व क़रार की ख़िलाफ़वर्ज़ी तो नहीं की है तो उसने जवाब दिया था कि नहीं ऐसा कभी नहीं हुआ फिर क़ैसर ने पूछा कि आख़िर वह कहते क्या हैं तो अबूसुफ़यान ने कहाः वह कहते हैं कि एक खुदा की इबादत करो, किसी और को खुदा का शरीक न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, पाकदामनी इख़्तियार करो, सच बोलो और सिल-ए-रहम करो। इस पर क़ैसर ने कहा कि अगर मैं वहाँ जा सकता तो ऐसे इन्सान के पैर धोकर पीता। इसी तरह जब सन् 5 बेअ़सत में मुसलमानों ने मुल्के हबश की तरफ हिजरत की थे तो वहाँ के बादशाह नजाशी से हज़रत जाफ़र इब्ने अबी तालिब[अ०] ने सीरते सरवरे कायनात[स०] के बारे में ये कहा था कि ऐ बादशाह हम लोग जाहिल थे, हम में हर तरफ जुल्मो सितम का रिवाज था और ताक़तवर लोग कमज़ोरों के लिए अज़ाब बने हुए थे इस दरमियान में हम ही में से एक शख़्स पैदा हुआ जिसने हमें इस्लाम की दावत दी, लोगों को बुतों की पूजा से रोका और हुक्म दिया कि वह सच बोला करें, ख़ून बहाने से बचें, यतीमों का माल न खायें, पड़ोसियों को तकलीफ न दें और उनके हक़ अदा करें, नमाज़ पढ़ें, रोज़े रखें और ज़कात अदा करें हम सब उन पर ईमान लाए हैं और उसी ईमान के वजह से हमारी क़ौम हमारी दुश्मन बन गई है। एक वह भी तारीख़ी वक़्त था जब हज़रत अबुतालिब और दूसरे बनी हाशिम के घराने वाले सरवरे कायनात[स०] की शादी का पैग़ाम लेकर हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] के वालिद के पास गये तो हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] ने अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल से कहा कि वरक़ा! तुम को तो तमाम सरदाराने अरब का हाल मालूम है अगर तुम अब्दुल्लाह के बेटे के बारे में कुछ कमी जानते हो तो मुझ से ज़रूर बयान करो। वरक़ा आसमानी किताबों के ज़बरदस्त आलिम थे और खुद मज़हबे ईसाई के पैरो थे। उन्होंने जवाब दिया कि अच्छा ख़दीजा मैं तुम्हारे हुक्म की तामील करता हूँ और उनकी कमियाँ बयान करता हूँः ''उनका नसब बेमिसाल है, उनका ख़ानदान बहुत बड़ा है। उनकी आँखें सुरमे वाली हैं, उनके अख़लाक़ बहुत ख़ूबसूरत हैं, उनका एहसान सब पर आम है और उनकी सख़ावत का मरतबा बहुत बुलन्द है। हज़रत ख़दीजारज़ि० ने फिर कहाः वरक़ा ये तो तुम उनकी फ़ज़ीलत बयान कर रहे हो मैंने तो उनकी कमियाँ पूछी थीं। वरक़ा ने कहा हाँ ख़दीजा[रज़ि०] सुना! अब बयान करता हूँः उनका चेहरा चाँद से ज़्यादा नूरानी, उनकी पेशानी बेहद रौशन, उनकी आँखें हद से ज़्यादा हसीन और ख़ूबसूरत, उनके रुख़सार लाल गुलाब से ज़्यादा ख़ूबसूरत, उनके बदन की खुशबू मुश्क की खुश्बू से तेज़, उनका कलाम शकर से ज़्यादा मीठा, और जब राह चलते हैं तो मालूम होता है कि चौधवीं रात का चाँद निकल आया और इस तरह सख़ावत करते हुए चलते हैं जैसे मोतियों भरे बादल मोती बरसा रहे हों। हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] ने फरमाया कि वरक़ा तुम ने फिर उनकी कोई कमी नहीं बयान की और फ़ज़ाएल ही ज़िक्र कर दिये आख़िर उनमें कमी क्या है? वरक़ा ने कहा ख़दीजा[रज़ि०]! ''अगर मुहम्मद में कोई कमी न हो तो मैं कहाँ से ले आऊँ और फिर मेरी क्या मजाल कि मैं मुहम्मद[स०] के फ़ज़ाएल बयान कर सकूँ ये तो बस एक मामूली सा तज़किरा था उन सिफ़ात को जो उनकी ज़ाते गिरामी में मौजूद हैं और एक क़तरा था उस समन्दर का।'' और हक़ीक़त तो ये है कि हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] खुद भी कमालात और सिफ़ाते मुहम्मदी से ख़ूब वाक़िफ़ थीं मगर चाहती ये थीं कि दूसरों की ज़बान से भी इस हासिले गुलिस्ताने कायनात की मदहोसना सुन लें और ये देख लें कि समझ और अक़्ल रखने वालों के दिलों पर इसका शाहकारे क़ुदरत का किस तरह सिक्का जमा हुआ है।

